Safeguarding the Intangible Cultural Heritage and Diverse Cultural Traditions of India (ICH Scheme) 2014-2015

Final Project Report

File No. 28-6/ICH-Scheme/121/2014-2015

By :
Manoj Lila Bhatt
Kailashpuri, Dharchula Road,
Pithoragarh, Uttrakhand
Pincode-262501
Contact : +91-9210025500
E-mail : manojlilabhat@gmail.com

Supported By : Sangeet Natak Academy & Ministry of Culture

सम्पूर्ण प्रोजेक्ट रिपोर्ट

प्रति,

सचिव,
संगीत नाटक अकादमी,
नई दिल्ली

विषय : आई.सी.एच. स्कीम 2014–2015 के तहत सम्पूर्ण प्रोजेक्ट रिपोर्ट प्रस्तुत करने हेतु।

आदरणीय / आदरणीया,

मैं 'सेफगार्डिंग द इंटेंजिबल कल्चरल हैरिटेज एंड डाइवर्स कल्चरल ट्रेडिशंस ऑफ इंडिया' **File No. 28-6/ICH-Scheme/121/2014-2015** स्कीम के तहत अपनी सम्पूर्ण प्रोजेक्ट रिपोर्ट प्रस्तुत कर रहा हूं।

आपका आभार प्रकट करता हूं कि संगीत नाटक अकादमी की तरफ से मुझे इस कार्य को करने का अवसर प्रदान किया गया। आशा करता हूं कि आपकी तरफ से इसी तरह का प्रोत्साहन आगे भी प्राप्त होता रहेगा।

धन्यवाद

दिनांक : 07.11.2016

स्थान : पिथौरागढ़, उत्तराखंड

भवदीय,

मनोज लीला भट्ट
कैलाशपुरी, धारचुला रोड
पिथौरागढ़, उत्तराखंड
पिनकोड–262501
सम्पर्क: +91-9210025500
ई–मेल : manojlilabhatt@gmail.com

File No. 28-6/ICH-Scheme/121/2014-2015

INDEX

Annexure No.	Content	Page No.
I	Utilization Certificate	—
II	Introduction-Choliya Dance	1-4
III	Choliya Dance Folk Instrument Pictures	5-12
IV	Choliya Dance Costume Pictures	13-24
V	Choliya Dance Costume Preperation	25-33
VI	Choliya Artist With Instruments & Costume	34-64
VII	Choliya Dance Artist Interviews	65-69
VIII	Choliya Dance Pictures	70-139
IX	Choliya Dance Songs	140-144
X	DVD-1-Choliya Dance Videos	—
	DVD-2-Final Project Report Document	—

ANNEXURE-I

Utilization Certificate

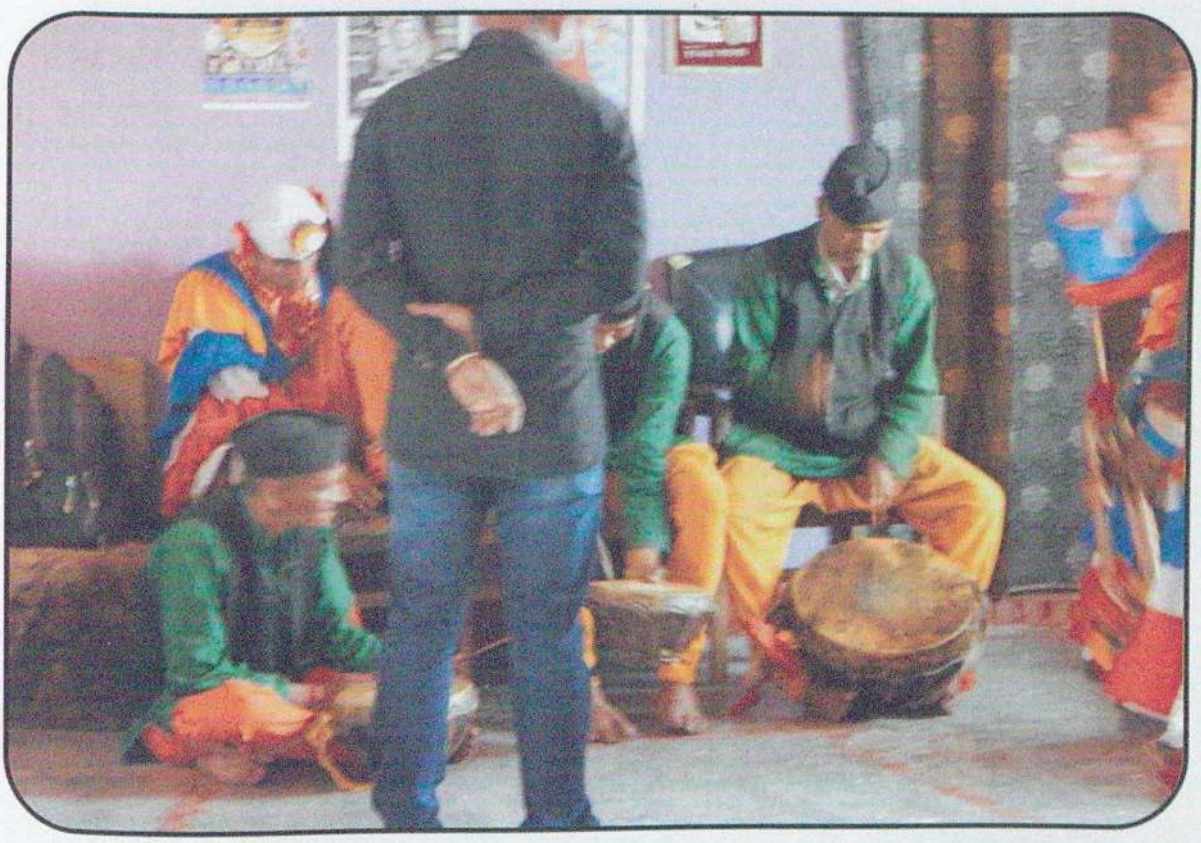

ANNEXURE-VI

CHOLIYA ARTIST WITH INSTRUMENTS

AND

COSTUME

लटेश्वर बाबा छलिया दल
पिथौरागढ़
"ॐ"
"फो.नं"
आपका हार्दिक
60369703

न् 1962,72,73 से राष्ट्रपति व प्रधान मंत्री द्वारा सम्मानित व पुरस्कृत दल
शिव भूमि छोलिया दल महरखोला
आठगाँव शिलिंग
विकास खण्ड - मूनाकोट
जनपद - पिथौरागढ़ (उत्तराखंड)
Mob.
9761281803
8006472453

शिव भूमि छोलिया दल महरसोला
आठगाँव शिलिंग
विकास खण्ड - मूनाकोट

शिव भूमि छोलिया दल महरसोला
आठगाँव शिलिंग
विकास खण्ड - मूनाकोट

सन् 1962,72,73 से राष्ट्रपति व प्रधानमंत्री द्वारा सम्मानित व पुरस्कृत दल
शिव भूमि छोलिया दल महरखोला
आगगाँव शिलिंग
विकास खण्ड - मूनाको
जनपद - पिथौरागढ़(उत्तराख

आगगाँव शिलिंग
विकास खण्ड - मूना
जनपद - पिथौरागढ़(उत्तरा

सन 1962,72,75 से राष्ट्रपति व प्रधान मंत्री द्वारा सम्मानित व पुरस्कृत दल
शिव भूमि छोलिया दल
शिलिंग
मूनाकोट
जनपद -
(उत्तराखंड)

शिव भूमि छोलिया
शिलिंग

पिथौरागढ़
5 से 9 नवम्बर
2009

5 से 9 नवम्बर
2009

2009

आप सभी
सादर आमंत्रित हैं।

आप सभी
सादर आमंत्रित हैं।

9 नवम्बर
2009
आप सभी

9 नवम्बर
2009
आप सभी

2009
आप सभी

2009
आप सभी
सादर आमंत्रित

2009
आप सभी

2009
आप सभी

9 नवम्बर
2009
आप सभी
आमंत्रित हैं।

5 से 9 नवम्बर
2009

5 से 9 नवम्बर
2009

2009
आप सभी

2009
आप सभी

2009
आप सभी

2009
आप सभी
सादर आमंत्रित हैं

2009

2009

ANNEXURE-VII

Choliya Dance Artist Interviews

Page 65 to 69

साक्षात्कार

छोलिया नृत्य पूरे उत्तराखंड में किया जाता है लेकिन कुमाऊं मंडल में शादी, मेलों और त्योहारों में इसका विशेष प्रचलन है। विशेषतौर से छोलिया नृत्य कुमाऊं मंडल के जनपद पिथौरागढ़ में अधिक प्रसिद्ध है क्योंकि यही इसका उद्‌भव स्थल भी है। इसलिये छोलिया नृत्य के पूरे समग्र में से इस नृत्य और इससे जुड़े लोक कलाकारों की स्थिति का पता लगाने के लिये शोध की निदर्शन विधि के अंतर्गत इस समग्र में से पिथौरागढ़ के 'कुमाऊं छोलिया विकास समिति' के समन्वयक भीमराम, छोलिया नर्तक सूरज कुमार, तथा मशकबीन वादक लक्ष्मण प्रसाद को साक्षात्कार के लिये चुना गया, साथ ही जनपद के प्रसिद्ध समाज सेवक तथा सांस्कृतिक संस्था 'नवोदक पर्वतीय कला केंद्र' के अध्यक्ष व छोलिया महोत्सव के आयोजक श्री हेमराज बिष्ट को भी साक्षात्कार के लिये चुना।

उपरोक्त व्यक्तियों के साक्षात्कार अगले पृष्ठों में वर्णित हैं–

छोलिया नृत्य में जहां नृत्य मुद्राएं दर्शकों को अभिभूत कर देते हैं वहीं इसमें प्रयोग होने वाले वाद्य यंत्र इस नृत्य में अद्भुत ऊर्जा भर देते हैं। उत्तराखंड के प्रसिद्ध व प्राचीन नृत्य छोलिया के प्रसिद्ध मशकबीन वादक लक्ष्मण ने बताये लोक वाद्य यंत्रों के अनुभव एवं महत्व :

छोलिया पूरी तरह नृत्य के लिये प्रसिद्ध है इसमें वाद्य यंत्रों की क्या विशेषता है

छोलिया नृत्य इसके पारम्परिक वाद्यों और उनसे निकलने वाली स्वर लहरियों के बिना अधूरा है।

आप मशकबीन बजाते हैं, इसके लिये क्या आपने कहीं कोई ट्रेनिंग ली है ?

हां मैंने अपनी युवाकाल में जब छोलिया नृत्य सीखने जाता था तो मुझे मशकबीन ने बहुत आकर्षित किया। फिर मैंने अपने से बड़े मशकबीन वादक श्री हरिराम जी से मशकबीन बजाने का प्रशिक्षण लिया।

आज के समय में लोकयंत्र वाद्यों की और उनके वादकों की क्या दशा है?

सही मायनो में लोक वाद्य यंत्र और उसके वादकों की समाज और सरकार दोनो की ओर से उपेक्षित हैं। लेकिन पिछले कुछ वर्षों से छोलिया नृत्य की लोकप्रियता में वापस इजाफा हुआ है जिसकी वजह से छोलिया नृत्य के वाद्य यंत्रों के वादकों की स्थिति में काफी सुधार हुआ हैं।

आप आने वाली पीढ़ी को इस सांस्कृतिक धरोहर को किस तरह सौपेंगे?

हम चाहते हैं कि आने वाली युवा पीढ़ी को हम इस नृत्य और इसमे6 प्रयुक्त होने वाले वाद्य यंत्रों से परिचित और प्रशिक्षित करा पाएं ताकि विलुप्त होती इस कला को संरक्षण मिल सके। इसके लिये हम अपनी ओर से भरसक प्रयास कर रहे हैं।

आप सरकार व समाज से क्या उम्मीद करते हैं?

छोलिया नृत्य से संबंधित लोक कलाकार और वादकों के साथ ही नही बल्कि अन्य पारंपरिक लोक कलाओं और उनके कलाकारों की सरकार व समाज द्वारा हमेशा उपेक्षा की जाती है, हम दोनो से यही उम्मीद करते हैं कि वो अपनी लोक कलाओं व उसके कलाकारो का प्रोत्साहन करे ना कि उपेक्षा ताकि उनकी पुरातन संस्कृति हमेशा जीवित रहे।

श्री सूरज कुमार पिथौरागढ़ जो कि जनपद के प्रसिद्ध कुमाऊं छोलिया विकास समिति के छोलिया दल में पिछले 15 वर्षों से छोलिया नृत्य से जुड़े हैं प्रस्तुत हैं उनका साक्षात्कार।

आप छोलिया नृत्य से कब से जुड़े हैं?

मैं छोलिया नृत्य बहुत पहले से कर रहा हूं, मैं जब 15 साल का था तब इस विधा से जुड़ा था।

छोलिया नृतक बनना क्यों चुना?

मेरे कुछ परिचित और मित्र इस नृत्य से जुड़े थे मैं उनके साथ कभी–कभी अभ्यास के लिये जाता था, छोलिया नृत्य मुझे अपनी ओर खींचता था इसमे कुछ विषेश था। मैं इस नृत्य से अपने आप ही जुड़ता चला गया।

आजीविका के लिये क्या छोलिया नृत्य पर्याप्त है अथवा आप कुछ और भी करते हैं?

इस नृत्य को अधिकतर बारातों में ही किया जाता है, बीच में बैंड बाजे आ जाने के कारण और डीजे वगैरह आने के कारण लोगों में इस पारम्परिक नृत्य का इस्तेमाल करना बन्द कर दिया था, जिसके कारण हमें आजीविका के लिये मुझे अपने गांव में एक छोटी सी दुकान खोलनी पड़ी, लेकिन पिछले कुछ सालों में छोलिया नृत्य एक बार फिर से विवाह समारोहों का अभिन्न अंग बन चुका है, जिसमे हमें शादी के सीजन में 60 से 70 हजार तक की कमाई आसानी से हो जाती है।

छोलिया एक पारम्परिक नृत्य है, समाज में इसका क्या स्तर है या लोगों में इसके प्रति क्या सोच है?

छोलिया नृत्य करने वालों को हमेशा ही समाज में समझा जाता था कि इसे निचली जाति के लोग ही करते हैं और इसको सम्मान की दृष्टि से नहीं देखा जाता था, लेकिन अब इसमे हर जाति और वर्ग के लोग आ रहें हैं और समाज में छोलिया नृत्य को सम्मान की दृष्टि से देखा जाने लगा है।

छोलिया नृत्य कल और आज में क्या अंतर है?

पारम्परिक छोलिया नृत्य पहले केवल विजय के उल्लास के लिये या बल को प्रदर्शित करने के लिये किया जाता था, लेकिन आज के आधुनिक युग में लोगो के बीच इस नृत्य के प्रति आकर्षण उतपन्न करने के लिये इसमे हास्य रस की प्रधानता रहती है, साथ ही अब यह मनोरंजन प्रधान रहता है। साथ ही इसमे कई छपेली व्यंग पर आधारित होती हैं जो आपस में एक दूसरे पर हाजिर जवाबी में इस्तेमाल होती हैं। मनोरंजन के लिये अब तो एक पुरूष को स्त्री बनाकर इसमे नाच जैसी चीजे भी शामिल की गई हैं।

क्या आप अपनी आने वाली पीढ़ी को भी छोलिया नृतक बनने के लिये प्रेरित करेंगे?

जी हां बिल्कुल! मैं चाहूंगा कि वो पढ़ लिख कर अच्छा काम करे नौकरी करे लेकिन साथ ही अपनी इस पारम्परिक विरासत को भी बचाए, इसके लिये मैं उसे जरूर छोलिया नृतक बनने के लिये प्रोत्साहित करूंगा।

कुमाऊं छोलिया विकास समिति" के समनवयक भीमराम

श्री भीमराम जी "कुमाऊं छोलिया विकास समिति" के समनवयक हैं, ये लगातार 25 वर्षो से छोलिया नृत्य के उत्थान के लिये कार्य कर रहे हैं। इनकी संस्था कुमाऊं छोलिया विकास समिति" ना सिर्फ लोक कलाकारों को प्रोत्साहन दे रही है बल्कि कुमाऊं की बहूमूल्य सांस्कृतिक विरासत की रक्षा भी कर रही है।

आपकी संस्था कुमाऊं की सबसे प्रसिद्ध व प्राचीन लोक विरासत छोलिया नृत्य को किस तरह संरक्षित कर रही है?

मैं लगातार 25 वर्षों से छोलिया नृत्य संरक्षण के लिये काम कर रहा हूं । पहले मैं एक अन्य सांस्कृतिक संस्था के साथ काम करता था लेकिन छोलिया नृत्य पर पूरी तरह से ध्यान देने के लिये मैंने अपनी संस्था कुमाऊं छोलिया विकास समिति बनाई। इसमें हम पुराने छोलिया कलाकारों के संरक्षण के साथ–साथ युवा छोलिया कलाकार भी तैयार करते हैं जो इस कला का प्रदर्शन देश के अन्य हिस्सों में करते हैं।

आप किस तरह इस दूरूह कार्य को कर पाते हैं आपकी टीम में कौन–कौन हैं?

मैं अपनी आजीविका चलाने के लिये नौकरी भी करता हूं तथा काफी समय से छोलिया नृत्य से जुड़े रहा हूं, इसलिये मैंने अपनी एक टीम का गठन किया जब भी कहीं छोलिया नृत्य का प्रदर्शन करना होता है हम उसकी रिहर्सल करते हैं और छोलिया पर ही केन्द्रित संस्था होने के कारण युवा कलाकार खुद हमसे सम्पर्क करते हैं।

लोगो के बीच किस तरह आप छोलिया नृत्य के विषय में जागरूकता फैलाते हैं?

यह काम तो खुद हो जाता है जब हम छोलिया नृत्य का आयोजन करते हैं तो इसका रोमांच और इसकी भावनाए लोगो को खुद इससे जोड़ देती हैं।

आपको क्या लगता है कि छोलिया अब बदल चुका है?

हां, पारमपरिक छोलिया नृत्य की अपेक्षा वर्तमान में छोलिया नृत्य मे वीर रस के साथ–साथ हास्य का पुट भी जुड़ गया है और अब यह मनोरंजन प्रधान हो गया है। इसमें एक प्रुरूष पात्र को महिला पात्र बनाकर रखा जाता है जो पहले नही होता था। आप इसे संस्कृति का ह्रास मानते हैं नहीं मैं इसे संस्कृति का ह्रास नहीं मानता इसे समय का परिवर्तन मानता हूं। शादि समारोहो के अलावा हम इस नृत्य को पारम्परिक नृत्य के रूप में ही प्रस्तुत करते हैं जहां यह अपने मूल रोप में ही प्रदर्शित होता है।

आपकी भविष्य की क्या योजनाएं हैं?

हमारी भविष्य की योजना है कि इसे हम अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रदर्शित करें और इसके लिये हमने आईसीसीआर (इंडियन काउंसिल फॉर कलचरल रिलेशन) में रजिस्टर्ड करने के लिये आवेदन कर रखा है।

आप लोगों व सरकार से किस तरह के सहयोग की अपेक्षा करते हैं?

हम सरकार से उम्मीद करते हैं कि इस एतिहासिक पारम्परिक नृत्य को करने वाले लोककालाकारों की वित्तीय मदद के लिये सरकार को योजना बनानी चाहिये ताकि ये कलाकार आजीवि का के लिये इस लोक कला को छोड़कर अन्य साधनों की ओर ना जाएं।

छोलिया महोत्सव में अद्भुत उर्जा से भर जाता है पिथौरागढ़ हेमराज बिष्ट

छोलिया महोत्सव के आयोजक श्री हेमराज बिष्ट पिछले 25 वर्षों से अपनी सांस्कृतिक संस्था "नवोदय पर्वतीय कला केन्द्र" के द्वारा लोक कलाओ तथा कलाकारों को संरक्षित करने का काम कर रहे हैं और साथ ही उन कलाकारों को लोगों के बीच परिचित कराने का काम भी कर रहे हैं। प्रस्तुत है उनका पूरा साक्षात्कार ।

जनपद पिथौरागढ में छोलिया नृत्य का आप कब से आयोजन कर रहे है?

सन 1997 से यहां हम हर साल पिथौरागढ़ में छोलिया महोत्सव का आयोजन कर रहें हैं। इसमें पूरे कुमाऊं मंडल से लोक कलाकार हिस्सा लेते हैं।

इस महोत्सव को मनाने का विचार मन में कैसे आया?

पर्वतीय क्षेत्रों में विलुप्त होती जा रही पारम्परिक विधाओं को पुनर्जीवित करना समय की मांग बन गई थी। मुझे हमेशा लगता था कि इन विधाओं में हमारे इतिहास की महान विरासत छुपी है इसे सहेजना अति आवश्यक है। छोलिया महोत्सव भी इस महान विधा को बचाने की एक पहल है।

छोलिया महोत्सव की थीम क्या होती है, किस तरह आप इतने लोक कलाकार और विधाओ को आमंत्रित करते हैं?

मैं पिछले 25 सालों से अपनी सांस्कृतिक संस्था 'नवोदय पर्वतीय कला केन्द्र' को चला रहा हूं, जिस वजह से पूरे प्रदेश के विभिन्न लोक कलाओं व उनसे से जुड़ा लोक कलाकारों से परिचय है अतः हम उन्हे आमंत्रित करते हैं। छोलिया महोत्सव का उद्देश्य ही है "खुद को पहचानों" का बोध कराना इसकी यही थीम होती है। छोलिया नृत्य अपने आप में एक महान विधा है जो इस जनपद की पहचान भी है, अतरू महोत्सव पूरी तरह इसी पर आधारित होता है।

छोलिया महोत्सव से जुड़ी तैयारियों के विषय में कुछ बताइये।

छोलिया महोत्सव का आयोजन पांच दिनों के लिये किया जाता है, जिसमे मुख्यतरू छोलिया नृत्य के साथ–साथ सांस्कृतिक झांकी प्रतियोगिता, सांस्कृतिक नृत्य नाट्य प्रतियोगिता के साथ साथ एंपण, व्यंजन, वेशभूषा, पारमपरिक गीत, उत्तरखंड साहित्य, एवं काव्य गोष्ठियों पर भी प्रतियोगिताएं आयोजित की जाते हैं ताकि यहां की विलुप्त होती जा रही संस्कृति को जनता के सम्मुख लाकर अपनी पुरा संस्कृति के प्रति जागरूकता पैदा की जा सके।

आयोजन के दौरान किस–किस तरह की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है?

आयोजन की सबसे बड़ी चुनौती इसके लिये धन जुटाने की होती है। सरकार द्वारा इसमें सहयोग तो किया जाता है लेकिन फिर भी पर्याप्त धन इकट्ठा नहीं हो पाता जिसके कारण इसे हर वर्ष आयोजित करने में बड़ी कठिनाई होती है। और धन इकट्ठा करने के लिये दूसरे स्रोतों पर निर्भर रहना पड़ता है।

जनता का क्या रूझान रहता है?

इस पूरे महोत्सव में जनता का रूझान काफी सकारात्मक रहता है वो बहुत बढ़ चढ़ कर पूरे महोत्सव में हिस्सा लेते हैं।

आप सरकार से और जनता से क्या उम्मीद करते हैं ?

हम सरकार से चाहते हैं कि वो इस काम में हमें पूर्णतरू सहयोग करे तहा जनता भी इसमें और बढ़–चढ़ कर हिस्सा ले ताकि हम अपनी आने वाली पीढ़ी को लोक कालाओं और लोक कलाकारों से परिचित करा सके और उन्हे इस विधा से जुड़ने के लिये प्रेरित कर सके।

ANNEXURE-VIII

Choliya Dance Pictures

Page No. 70 to 139

vodafone

दिगौंस-पिथौरागढ़

घलियादल

आपका हार्दिक स्वागत

2012

ANNEXURE-IX

Choliya Dance Songs

Page No. 140-144

छोलिया नृत्य के गीत

छोलिया नृत्य में छपेली गाई जाती है। मूलतः छपेली जोड़े में गाई जाती है। छपेली सामूहिक गीत पद्धति है। इसमें कुछ पद पहले अन्तरा के रूप में गाये जाते हैं, पुनः मुख्य पद वाजों की चमक के साथ लहरे लेते हुये, बल खाते हुये स्वर में गाये जाते हैं। यह गीत पद्धति नृत्य के रूप में भी लायी जाती है। जो मन की प्रफुल्लता को दर्शाती है। मुख्य पद प्रायः एक ही गाता है जो प्रकृति वर्णन, प्रेम वर्णन, श्रृंगार रस पर आधारित होता है।

विषय की दृष्टि में छपेली प्रेम एव श्रृंगार प्रधान नृत्य गीत है। आशु गायक की प्रतिभा, चार्तुय, वाक पटुता और कल्पना कौशल के साथ ही नर्तक की विविध नृत्य– भवभंगिमाओ, पदगति, अंग–संचालन, साथ में वाद्य यंत्रों का संचालन का माधुर्य सब श्रोताओं और दर्शकों को विमुग्ध कर देता है। लोक कला के विद्वान रमेश जोशी का कहना है कि 'छपेली' शब्द क्षेपण से बना है। यानी माया का आर्तनाद। जिसका तात्पर्य दूसरे पर आरोपण करना या फैंकना होता है। यानी व्यंग्य छेड़छाड़ पहले एक विलम्बी पद गाया जाता है। उसके बाद नाच किया जाता है। इसमें कुछ भी गाया जा सकता है। फिल्मी गीत भी चलते हैं। प्रारंभिक स्वर अक्सर न्यौलि जैसा भी होता है। जैसे–

असेली को रेत
कफू बास जेठ
मैसाले मामुल मि
बखतैल भेंट

उसके बाद वाद्य बजते हैं और नाच होता है। एक गायक स्वर उठाता है। दूसरे नर्तक इस स्वर को लेते हुए नाचते हैं। वैसे ही–

रहटै की तान
घटकुली वान
राजा हरीचन
या नी हूनी मायादार
या नी हूनी बान।
या–सतगढ़ी का पाला चला
कलू फुलियाँ लाल
छोड़ि संगि पिछौड़ी चाल
फोकछू माया जाल

प्रसिद्ध नेपाली गीतों के जानकार परमानन्द भट्ट कुछ गीतों के मुखड़े बताते हुए कहते हैं –'छेपली एक अलग विधा है। इस नृत्य में इसका प्रयोग किया जा सकता है। क्योंकि छेपली छेड़–छाड़ की विधा है। प्रेमी–प्रेमिकाओं, भाई–बहन सभी संबंधों के बीच यह गीत–गाय जाते हैं। जिसमें उलहाना, उपदेश शिकायत, सभी कुछ है। जैसे लड़का कहता है – **पतलो कमर छै तेरो पतलो जीवन छ।/ लाग सुवा मेरा पाछा तेरो सलाम छ।** यानी कि इस समय तेरी युवावस्था पूरे जोरों पर है। तुझे सलाम है। अब तू मेरे पीछे लग। इस पर लड़की जवाब देती है– **पतलो कमर छ मेरो पतलो जीवन छ। लागरी न तेरा पीछा सासू खराब छ**। लड़की कहती है वह तो सब ठीक–ठाक है पर क्या करूँ मेरी सासू खराब है। उसी तरह भाई–बहन का संवाद–लड़की कहती है–काली बाकरी बन लगायूँ बनैंछ/आल दाज्यू घरै तुम मनै की मनै छ। इस पर दाज्यू कहते हैं–गुड़ा गुलीयो छ नून नूनियो छ/तमाख तीतैं छ एक लौ भाई घर हमरो घर हमरै रीतै छ।

छोलिया नृत्य में इस्तेमाल होने वाले कुछ छपेली गीत निम्न प्रकार है :

गीत नं. 1

''ओ बाना, पनुली चकोरा त्वीले धारौ बोला
ओ लौंडा कुन्दन अमीना त्वीले धारौ बोला।
सुपी भरि धाना वे, सुपि भरी धाना
एतरि दुनियाँ मांजी त्वे बतूँनी बाना।

पाखै की दन्यारी वे, पाखै की दन्यारी।
दंत पाटी भुली जूँलो, नि भुलूँ अन्वारी।
पहाड़ भेटिया घोड़ो, मैदान को हाती,
त्वीलें यसी बोली मारी धन छ मेरी छाती।
ओ बाना पनुली चकोरा, त्वील धारौ बोला।''

गीत नं. 2

सार कुमौ मै सबु है ढुली अल्मोड़े की बजारा – ऽऽ–2
राज्यू हैबेरा द्वी आँगुली भौजी वणै हुस्यारा–ऽऽ–2
हिटो हो दाज्यू घुमी औलो लाला की बजारा–ऽऽ–2

जोड–आ–ऽ–दाज्यू मंगुनी बीड़ी सलाई भैजी माँगे पाना
दाज्यू मयारा सीद सादा भौजी भली बाना–अल्मोड़े की बजारा–हिटो हो–ऽ
लाल–ऽ ऽ ला
नस्यूड़ी को साला अल्माड़े पटाला दाज्यू खानी लड्डू थाड़ा
भौजी मांगे बाला–अल्मोड़े की बजारा–हिटो हो दाज्यू
ला– ला ऽ ऽ

. दातुलै की धारा, दाज्यू खानी आलू गोबी भौजी मांगे सिकारा
अल्मोड़े की बजारा हिटो हो दाज्यू

गीत न. 3

रामगंगा तराई दे साधू
झुलघाटा मैं आफी तरूंलो।

माछी को रगत साधू माछी को रगत
तू मेरी जोग्याण होली मैं तेरो भगत
मैं तेरो भगत झुलघाटा मैं आफी तरूंलो

भैंसी नौ रुमुली–ठूमुली
गै किनू काँ जा री
त्यार–म्यार बैठिया ठौरा फुलली हजारी
फुलली हजारी झुलघाटा मैं आफी तरूंलो।

हिट सुवा घूमी औनूं जोगी का रूप ले
सब देला नावी–माणा तू देली सूप ले
तू देली सूप ले झुलघाटा मैं आफी तरूंलो।

सिलगड़ी का पाला चला गिरि खेलन्या गड़ो
तू होली हिंसाल् त्वापा मैं उड़न्या चड़ो।
मैं उड़न्या चड़ो झुलघाटा मैं आफी तरूंलो।

बांसुली का बाना साधू, बासुली का बाना
आँख को सुरमा होलो, तू पोछिये झन
तू पेछिये झन झुलघाटा मैं आफी तरूंलो।

गीत नं. 4

पुरूष ओ मेरी पराणी, क्ये दी जा निसाणी
जभते तू नि हूनी, झूरै छ पराणी
महिला हरै जैं निसाणी, हाँ रै जै कहाणी
द्वि बोल मीठा सुणि लै, समझ निसाणी
पुरूष हरीली छ धोति तेरी, सुकीलो छ गाता
हरी भरी धरती में ह्यूँ जसीक छाजा
महिला घर म्यार, खेत स्यार म्यार पछिला ऊँछा
परहोशां हिटछा जाणी को दुणी में रूँछा
पुरूष बोल त्यरा अलग्वाजा बांसुरी जसं बाजा
थोल त्यरा बुरांशी का फूल जस छाजा
महिला लगी लै आँछरी, या लागी रै मसाणी
द्वि मीठा बोल सुणि लै समझ निसाणी
पुरूष सुणै दै मीठा बोल, है रै छ अथाणी
जभतै तू नी हुनी झुरै छ पराणी
पुरूष छिड़ को पाणी का जसा स्याता तेरा दाँता
असोजा का मैहेणे की पुन्यू कसी राता
महिला घटा पाटो कसी छाती जु कसी कानी
परबी–त्यारा, गौ बजारा सबै तूकै चानी

गीत नं. 5

गोरख्या चेली भागूली,
हंसिया बाना तीले धार बोला– 2
पधान लौडा सेरूबा
सेरूबा लौंडा मेरी – रामो रामा – 2

माछी ले फटुंगा हाणी बलुता रेत मा
मेरी सुवा मलि देखी छी हरिया खेत मा
ये गोरिख्या चेली भागूली...

नैनीताल आग लागी बिजुली तार
धरती हिलन पैगे जौवन वार
ये गोरिख्या चेली भागूली....

अस्कोर पानी का धार कमाल रूजायो
उदासियो मन मेरो गित गायो बुझायो
ये गोरिख्या चेली भागूली....

सोर की सड़क पानी–मोटर की हवा
तेरा कमर भल छाज छी, धमेली का डोरा
ये गोरिख्या चेली भागूली....

ये गोरख्या चेली भागूली –
हंसिया बाना तीले धार बोला – 2
पधान लौंडा सेरूबा –
सेरूबा लौडा मेरी रामो–राम – 2

गीत नं. 6

गोपुली चाय खान बजार गयूं
मेर गोपुनौ बिसीर को मोड़ – 2
गोपुली तीहणी बिलौज लायूं
मेर गोपु सटका लीग्यो चोर – 2

छेपली हे पितलकी बेलि सुवा, पितल की बेली
किलै रिसा रैदे मेरि अरे ओ माया मोहनी
गोपुली चाय खान.....

छेपली हे पानी को गिलास सुवा पानी को गिलास
मैके सुवा लागी रैद तेरि आंण की आस
गोपुली चाय खान.....

छपेली हे ऋतु ऐगे भांगी खानपी गरमी चैतकी
मन मेरो निलागनो बिना वे कै देखि
गोपुली चाय खान.....

छेपली हे पालिंग की पात सुवा फलिंग की पात
दीन मेरि कटि जानी नि कटनी रात
गोपुली चाय खान.....

ती लै ग तेरि लम्बी लट्ट टसर का धुन
अकली धमेलि है जाली टूटि जानि धुन

गीत नं. 7

बाटा तली हरिया घास – 2
हजुर – साली मेरी, हिमुली माया नी मार–2
हर हर जानी रे, यो बाली उमर
माया न्हैगे, सूवा में की करू चाई बेर – 2

पार भीडा.....लम्बा ढाबा, झलको मेरी ऑसी–2
ओ तू छोड ली .....मै का छडोड़ो हे जो अल्ले..... फॉसी
हजुर–साली मेरी, हिमुली माया नी मार
तारा तली हरिया घास – 2, हजुर साली 2

गरी ल्यूंयू बन्दूक की, पारी न्यूडू ह्यूं की – 2
ओ सांची कये नी पत्यानी, कल्ज्यो काटी द्यो की – 2
हजुर–साली मेरी, हियुली माया नी मार
वारा तली हरिया घास–2, हजुर साली ...2

ओ घास काटना....हाथ काटीयो, रकैत छनैछः–2
सओ झिकैघड़ी बैजा साली, वकत छनैछः – 2
हजुर–साली मेरी, हिमुली माया नी मार
वारा तली हरिया घास, – 2..हजुर–साली...2

ओ गंगा ज्यू का बगड़ में, पाली रै छः बैरी – 2
सओ टाप लागी तमाककी, नरा लागी तेरी – 2
हजुर साली मेरी, हिमुली माया नी मार
बारा तली हरिया घास – 2
हजुर– साली मेरी, हिमूली माया नी मार – 2

इस प्रकार से ये छोलिया नृत्य में गाए जाने वाले छपेली गीतों का वर्णन है।